अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) जूँ कहलाती है-

(क) पंचेन्द्रिय (ख) बेइन्द्रिय

(ग) तेइन्द्रिय (घ) चउरिन्द्रय ( )

(b) गृहस्थ समाज के लिये आदर्श होते हैं-

(क) साधु (ख) श्रावक

(ग) श्रीमंत (घ) पंडित ( )

(c) जिन कारणों से आत्मा पर कर्म पुद्गलों का आगमन होता है -

(क) पाप (ख) पुण्य

(ग) बंध (घ) आश्रव ( )

(d) साधु के द्वारा स्त्री जाति का स्पर्श करने से कौनसे महाव्रत में दोष लगता है -

(क) परिग्रह (ख) अहिंसा

(ग) ब्रह्मचर्य (घ) अचौर्य ( )

(e) छल-कपट आदि की चेष्टा होना, कौनसी संज्ञा है -

(क) परिग्रह (ख) लोभ

(ग) लोक (घ) माया ( )

(f) अनाश्रव का फल है-

(क) तप (ख) वोदाण

(ग) संयम (घ) अक्रिया ( )

(g) मुष्टि आदि संकेतपूर्वक तप करना है-

(क) णिरवसेसं (ख) अइक्कंतं

(ग) संकेयं (घ) णियंटियं ( )

(h) ''चार तीर्थ की सेवा करे'' बोल है-

(क) लक्षण (ख) भूषण

(ग) प्रभावना (घ) भावना ( )

(i) ''तुषित'' भेद है-

(क) लौकान्तिक (ख) अनुत्तर विमान

(ग) वाणव्यंतर (घ) ग्रैवेयक ( )

(j) जीवास्तिकाय नहीं होता है -

(क) अरूपी (ख) शाश्वत

(ग) अशाश्वत (घ) गंधरहित ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) चारित्र आत्मा सभी संसारी जीवों में पाई जाती है। ( )

(b) पुण्य का भोग करना साधना में बाधक नहीं है। ( )

(c) सेवा का फल श्रवण होता है। ( )

(d) कठिन तपस्या करके धर्म की प्रभावना करने वाला तपस्वी प्रभावक होता है। ( )

(e) मनुष्य में सबसे कम आहार संज्ञा है। ( )

(f) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सबसे कम मूल गुण पच्चक्खाणी होते हैं। ( )

(g) समकित, धर्मरूपी आभूषणों की दुकान है। ( )

(h) समिति और गुप्ति में उपयोगवान रहना संवर तत्त्व है। ( )

(i) कर्म का संयोग होने से वियोग निश्चित है। ( )

(j) सामान्य केवली की ऋद्धि दर्शन हेतु भी आहारक शरीर बनाया जाता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	अनुकंपा	(क) सुपच्चक्खाण	.....
(b)	नीवी	(ख) पुद्गलास्तिकाय	.....
(c)	संवृत	(ग) ग्रैवेयक	.....
(d)	संलाप	(घ) मनुष्यायु	.....
(e)	सुभद्र	(च) लक्षण	.....
(f)	वृत्त	(छ) कापोत लेश्या	.....
(g)	संख्यात प्रदेशी	(ज) यतना	.....
(h)	अलसी के फूल	(झ) भय संज्ञा	.....
(i)	विनम्रता	(य) अद्धा	.....
(j)	अधीरता	(र) संस्थान	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं वेदनीय कर्म के उदय से पैदा होती हूँ। .....

(b) मेरा बहुत आदर-सम्मान करें, मिथ्यादृष्टि का नहीं। .....

(c) मुझमें चारों प्रकार के आहार, धन-धान्य आदि का त्याग किया जाता है। .....

(d) मैं आत्मा को शुद्ध बनाने वाला ध्यान हूँ। .....

(e) मैं निर्जरा का प्रमुख कारण हूँ। .....

(f) मेरे भेद स्वभाव में ही परिणमन करते रहते हैं। .....

(g) मैं सीधा मोक्ष मार्ग का कारण हूँ। .....

(h) मैं वीतरागता में बाधक बनता हूँ। .....

(i) मेरा फल संयम है। .....

(j) रत्नावली, कनकावली आदि तपों का मुझमें समावेश है। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अपेक्षा संयत, असंयत, संयतासंयत का अल्पबहुत्व लिखिए।

.....

.....

.....

(b) देवगति से आये हुए जीव में कौनसी संज्ञाएँ सबसे अधिक पाई जाती हैं ?

.....

.....

.....

(c) सभी संसारी व सिद्धों में पाई जाने वाली आत्माएँ कौन-कौनसी हैं ?

.....

.....

.....

(d) सच्चे मार्ग को संसार बढ़ाने वाला मानने से कौनसा मिथ्यात्व लगता है ?

.....

.....

.....

(e) अपूर्वकरण गुणस्थान में पाई जाने वाली अपूर्व बातें कौन-कौनसी हैं ?

.....

.....

.....

(f) काय को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

(g) दूषण किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(h) सवणे-णाणे का थोकड़ा कहाँ से लिया गया है ?

.....

.....

.....

(i) परिहार-विशुद्धि चारित्र में गर्मी में कितना-कितना तप किया जाता है ?

.....

.....

.....

(j) 24वें बोल का 36वाँ भंग कौनसा है ?

.....

.....

.....

(k) श्रोत्रेन्द्रिय के विकार लिखिए।

.....

.....

.....

(l) मोहनीय कर्म किन-किन कारणों से बंधता है ?

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3 = (36)

(a) क्षेत्र की अपेक्षा अवधिज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान में अन्तर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) 11वें गुणस्थान की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) सातिचार छेदोपस्थापनीय चारित्र को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) मैथुन संज्ञा के चार कारण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) सर्व उत्तर गुण पच्चक्खाण के भेदों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) अप्रशस्त व प्रशस्त ध्यान को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) वैक्रिय मिश्र काय योग किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(h) जीव, सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाणी है, देश उत्तरगुण पच्चक्खाणी हैं या अपच्चक्खाणी है ? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) नारकी की क्षेत्र वेदना को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(j) स्थानक के प्रथम तीन बोल लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(k) परिहार विशुद्धि चारित्र ग्रहण करने की योग्यता लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(l) शुक्ल ध्यान का लक्षण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....